

विचार बिन्दु

गुणों से ही मनुष्य महान होता है, ऊँचे आसन पर बैठने से नहीं। महल के ऊँचे शिखर पर बैठने मात्र से कौवा गरूड़ नहीं हो सकता। –चाणक्य

आयुर्वेद के रसायन मानवता के लिये वरदान हैं

आज की चर्चा एक बार पुनः आयुर्वेद के रसायनों पर है। जैसा कि पहले चर्चा की जा चुकी है, जीवन में एक ऐसा समय आता है जब कितना ही बुद्धिमान डॉक्टर हो या कितनी ही बढिया चिकित्सा हो, रोग ठीक करना मुश्किल हो जाता है। यदि व्यक्ति का बल और मांस क्षीण हो जाये तो ऐसा भान होने लगता है जैसे आयु पूरी हो चुकी है। कोई महाव्याधि अचानक निवर्तित हो जाये व भोजन से मिलने वाले लाभ मिलना भी बंद हो जायें तो भी यही स्थिति बनती है (देखें, सु.सू.32.7-8)ः चिकित्स्यमानः सम्यक् च विकारो योऽभिवर्धते। प्रक्षीणबलमांसस्य लक्षणं तद्रतायुषः॥ निवर्तते महाव्याधिः सहसा यस्य देहिनः। न चाहारफलं यस्य दृश्यते स विनश्यति॥ जानी-मानी व बहुत लोगों पर सफल और बढिया तैयार औषधि भी यदि किसी व्यक्ति में वांछित प्रभाव ना दे पा रही हो तो व्यक्ति को गैर-उपचार योग्य श्रेणी में माना जाता है। चिकित्सक की सलाह से तैयार कर दिये गये भोजन का वांछित परिणाम नहीं मिल रहा हो, तो चिंताजनक स्थिति मानी जाती है (देखें, च.इ.1.2.7-8)ः विज्ञातं बहुशः सिद्धं विधिवच्चावचारितम्॥ न सिध्यत्योषधं यस्य नास्ति तस्य चिकित्सितम्॥ आहारमुपयुञ्जानो भिषजा सूचकल्पितम्॥ यः फलं तस्य नाप्नोति दुर्लभं तस्य जीवितम्॥ बात यहाँ अति-कठिन परिस्थिति की है।

वस्तुतः आयुर्वेद के दृष्टिकोण से माना जाता है कि जब मृत्यु का समय निकट आता है तो कुछ अरिष्ट प्रकट होते हैं (देखें, च.इ.2.5)ः न त्वरिष्टस्य जातस्य नाशोऽस्ति मरणादुत्तो। मरणं चापि तत्रास्ति यन्नारिष्टपुरःसरम्॥ किन्तु माना यह भी जाता है कि अरिष्ट की निर्विवाद रूप से पहचानने में त्रुटि भी हो सकती है (देखें, च.इ.2.6)ः मिथ्यादृष्टमरिष्टाभमनरिष्टमजानता। अरिष्टं वाऽप्यसम्बुद्धमेतत् प्रज्ञापराधजम्॥ कहने का तात्पर्य यह है कि हो सकता है वास्तव में अरिष्ट प्रकट ना हुआ हो, फिर भी त्रुटिवश प्रकट हुआ मान लिया जाये।

अतः यदि भ्रम की स्थिति हो तो चिकित्सा की जाये या नहीं? यदि हाँ, तो कैसी चिकित्सा उपयुक्त हो सकती है? मेरे विचार से अरिष्ट की सही या गलत पहचान के पच्बड़े से बाहर निकलकर चिकित्सा करना ही उचित है। ऐसे अनेक लोग हैं जिन्हें अंतिम स्थिति में पहुँचा हुआ मानकर धरती पर लिटाकर तुलसी और गंगाबल खिला-फिला दिया गया। गाय की बछिया की पूँछ पकड़ा कर दान-पुण्य भी करा दिया गया। पर वे फिर उठ खड़े हुये और कई साल चले। इसलिये जब तक प्राण हैं, चिकित्सा करना उपयोगी है।

अब प्रश्न यह है कि ऐसी कौन सी चिकित्सा है जो अरिष्ट निवारण में सक्षम हो सकती है? वैसे तो अरिष्ट-निवारण की सामर्थ्य कम ही व्यक्तियों में होती है, तथापि यह असंभव नहीं है। अरिष्ट प्रकट होने के बाद भी युक्ति-व्याप्राश्य, सत्त्वावजय और दैव-व्याप्राश्य की त्रिवेणी में की गयी चिकित्सा मृत्यु को टाल सकती है। इसका संकेत वैज्ञानिक-महर्षि आचार्य सुश्रुत ने दिया है। रिष्ट उत्पन्न होने पर मृत्यु निश्चित है, तथापि मांस दोषों से मुक्त विद्वान के द्वारा या रसायन, तप, और जप में पारंगत व्यक्ति द्वारा मृत्यु का निवारण किया जा सकता है (देखें, सु.सू.28.5)ः ध्रुवन्तु मरणं रिष्टे ब्राह्मणैस्तत् किलात्मनैः। रसायनतपोयज्ञतत्परैर्वा निर्वान्यते॥ कठिन रोगों की स्थिति में भी बचने की संभावना यहाँ साफ़ दृष्टिगोचर है।

क्या वास्तव में रसायन इतने उपयोगी और प्रभावी हैं? संहिताओं, शोध और अनुभव तीनों में ही इस प्रश्न का उत्तर धनात्मक ही मिलता है। आइये पहले संहिताओं के वे प्रमाण देखते हैं जो केवल कठिन रोगों व परिस्थितियों के सन्दर्भ में हैं। पहला प्रमाण आचार्य सुश्रुत के उस कथन से मिलता है जिसमें रोगों की सूची देते हुये संकेत किया गया है कि ये रोग रसायन के बिना असाध्य हो जाते हैं (देखें, सु.सू.33.3)ः ये जुष्टा व्याधयो यान्त्यवार्यताम्॥ रसायनाद्दिना वत्स तान् शुण्वेकमना मम॥। इस संदर्भ से यह संकेत तो स्पष्ट है ही कि रसायन से रोगों को उन अवस्थाओं में जाने से रोका जा सकता है जहां वे चिकित्सा की दृष्टि से असाध्य हो जाते हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि रसायन असाध्य रोगों को भी साध्य बनाते हुये चिकित्सा में मददगार हो सकते हैं। उदाहरण के लिये, हालींय की कुछ और प्रमेः असाध्य होते हैं, पर आचार्य सुश्रुत ने स्वयं एक ऐसा योग दिया है जो असाध्य कुछ और प्रमेह को भी ठीक कर देता है (सु.चि. 10.12)ः एषौषधायस्क्रुतिरसाध्यं कुछं प्रमेहं वा सुचयति। वस्तुतः यह उस सिद्धान्त की विजय है जिसमें आचार्य चरक ने चिकित्सा की सफलता में युक्ति को सर्वोपरि माना है। यहाँ निहितार्थ यह है कि यदि रसायन चिकित्सा की जाये तो ये रोग असाध्य नहीं हो पाते। आधुनिक वैज्ञानिक शोध में रसायन उसी प्रकार उपयोगी पाये गये हैं जैसा कि आचार्य सुश्रुत ने निर्दिष्ट किया है। दूसरा प्रमाण, चरकसंहिता की ठीका में चक्रपाणि द्वारा महर्षि अप्सक्यो को उद्धृत करते हुए कहा गया है कि रसायन, तप व जप में सिद्ध महान लोग काल मृत्यु को भी जीत लेते हैं, पर आलसी आदमी नहीं (देखें, च.सू.1.62 पर चक्रपाणि.)ः रसायनतपो जापयोगसिद्धैर्महात्मभिः॥ कालमृत्युरपि प्राज्ञैर्जीयते नालसैनैः॥ तीसरा प्रमाण महर्षि-वैज्ञानिक आचार्य चरक द्वारा सोसायलल कोलेप्स या जनपदोर्व्यंश की स्थिति-हवा, पानी, मिट्टी और ऋतुओं के प्रदूषित हो जाने से उत्पन्न महामारियों-में पंचकर्म व रसायनों के द्वारा समस्या निवारण हेतु सुझाया गया रास्ता है (देखें, च.वि.3.13-14)ः येषां न मृत्युसामान्यं सामान्यं न च कर्मणापम्। कर्म पक्षिव्यंशं तेषां भेषजं परमुच्यते॥ रसायनानां विधिवच्चोपयोगः शस्यते। शस्यते देववृत्तिश्च भेषजैः पूर्वमुद्धतैः॥रसायन द्रव्यों के साथ ही अद्रव्य रसायन भी हैं जो

हाल में हुये एक क्लीनिकल ट्रायल में पाया गया कि आमलकी रसायन के प्रयोग से डी.एन.ए.स्ट्रैंड में तोडफोड की गति कम होती है तथा रिपेयर मैकेनिज्म तेज हो जाती हैं।
यह रसायन सुरक्षित भी पाया गया हैं। एक अन्य अध्ययन में, जो 45-60 वर्ष के लोगों के मध्य किया गया, पाया गया है कि आमलकी रसायन का प्रयोग रक्त की परिफेरल ब्लड मोनोन्यूलियर सेल्स में टीलोमीयर की लम्बाई में बदलाव किये बिना टीलोमेरेज क्रियात्मकता को बढ़ा देता हैं। इससे चूंकि टीलोमियर के क्षरण में कमी आती है, अतः हैल्थस्पान में बेहतरी होती है।

सत्त्वावजय और दैव-व्याप्राश्य चिकित्सा में मददगार हैं। उदाहरण के लिये दान, विनम्रता, दया, सत्य, ब्रह्मचर्य, कृतज्ञता, मित्रता, रसायन व अच्छे कार्य सब उपवर्धक हैं (अ.ह.शा.3.120)ः दानशीलरोग्यासत्य ब्रह्मचर्यकृतज्ञताः॥ रसायनाभि मैत्री च पुण्यायुर्वृद्धिकृद्गुणः॥

संहिताओं के साथ ही आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों से भी रसायनों की क्रियात्मकता के ठोस प्रमाण मिल रहे हैं। मेरे ज्ञान में रसायन योगों पर 2100 शोधपत्र और एकल रसायनों पर कम से कम 5000 शोधपत्रों में से एक भी ऐसा नहीं है जिसमें रसायनों की त्रिदोष-नियामकता पर ठोस प्रश्नचिह्न लगाया हो। आइये कुछ उदाहरण देखते है।

उग्र-आधारित रोगजनन का एक प्रमुख कारण डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म में गड़बड़ी होना माना जाता है। जीविक कोशिकाओं के गुणसूत्रों में पाये जाने वाले तंतुनुमा अणु को डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड या डी.एन.ए.कहा जाता है। इसी में अनुांशिक कोड निहित रहता है। जैसे-जैसे डी.एन.ए. डैमेज का बोझ बढ़ता जाता है, शरीर बुढ़ापे की ओर बढ़ता जाता है। इस कारण अनेक समस्यायें जैसे-कैंसर, न्यूरोडीजेनरेसन और बढ़ती उम्र के कारण होने वाली अनेक व्याधियां विकसित हो जाती हैं। शरीर की कोशिकाओं द्वारा डी.एन.ए. डैमेज केसकेत प्राप्त करना और टूट-फूट की मरम्मत करने की क्षमता उम्र के साथ घटती जाती है। रसलिये बढ़ती उम्र में अनेक रोग लग जाते है।

तो क्या आयुर्वेद के रसायन बढ़ती उम्र के लोगों में डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म की गति को बढ़ा सकते हैं? इस विषय में कई अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि रसायन औषधियाँ डी.एन.ए. रिपेयर की गति को बढाकर बुढ़ापा और भी गति को धीमा कर देती हैं। हाल में हुये एक क्लीनिकल ट्रायल में पाया गया कि आमलकी रसायन के प्रयोग से डी.एन.ए.स्ट्रैंड में तोडफोड की गति कम होती है तथा रिपेयर मैकेनिज्म तेज हो जाती है। यह रसायन सुरक्षित भी पाया गया है। एक अन्य अध्ययन में, जो 45-60 वर्ष के लोगों के मध्य किया गया, पाया गया है कि आमलकी रसायन का प्रयोग रक्त की परिफेरल ब्लड मोनोन्यूलियर सेल्स में टीलोमीयर की लम्बाई में बदलाव किये बिना टीलोमेरेज क्रियात्मकता को बढ़ा देता है। इससे चूंकि टीलोमियर के क्षरण में कमी आती है, अतः हैल्थस्पान में बेहतरी होती है। एक तीसरा उदाहरण अश्वगंधा का दिया जा सकता है। कुल 50 स्वस्थ खिलाडिओं के मध्य किये गये क्लीनिकल ट्रायल में यह पाया गया है कि अश्वगंधा की जड़ का एक्सटैक्ट कार्डियोस्पायरेटरी सहनशीलता को बढ़ा देता है। इसके अलावा अनेक इनवाइट्रो, इन वाईवो और क्लिनिकल अध्ययन में अश्वगंधा और आमलकी सहित मामाम रसायनों द्वारा कैंसर, मधुमेह, कार्डियोवैस्कुलर बीमारियाँ, मानसिक बीमारियों तथा अपर-रेंस्पायरेटरी-ट्रैक्टसंक्रमण से बचाव होता है। एक प्रमाण-आधारित तथ्य यह भी है कि आयुर्वेद के रसायनों से बेहतर एंटी-एंजाइटी व वाजीकर से बेहतर एंटी-डिप्रेशेंट औषधि कोई नहीं है। बुढ़ापा आने का एक कारण ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन का बढ़ना भी है। रसायन द्रव्यों के उपयोग करते रहने से शरीर का व्याधिहमत्व बढता है तथा ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन में कमी होती है।

उत्तम बात यह है कि कुछ ऐसे द्रव्य हैं जो आहार, रसायन और औषधि, तीनों ही प्रकारों में वर्गीकृत है।फल व सुखे मेवे, खजूर, द्राक्षा, मुनक्का, बादाम, तिल, आँवला, लहसुन, सेंड, कालींफूल, पिपली, हल्दी, केसर, जीरा, धनिया, मूंग, जल, दूध, घी, तुलसी, शहद, गुड़, विकटु एवं त्रिफला आदि ऐसे द्रव्य हैं जिनके युक्तिपूर्वक सेवन के लिये किसी क्लिनिकल ट्रायल का ईंतजार करने की आवश्यकता नहीं है। संहिता, साईंस और अनुभव सब इन द्रव्यों के पक्ष में हैं।

मृत्यु की तिथि तय नहीं है, अपितु प्राणियों की आयु युक्ति की अपेक्षा रखती है (च.वि. 3.29)ः भूतानामायुर्वृक्षितमपेक्षते। युक्ति से उम्र बढ सकती है। असल में युक्तिव्याप्राश्य आचार्य चरक द्वारा आयुर्वेदाचार्यों पर किये गये विश्वास की पराकाष्ठा है। चिकित्सा में सफलता युक्ति पर निर्भर है (च.सू. 2.16)ः सिद्धियुक्ती प्रतिष्ठिता। जब सफलता युक्ति पर आश्रित हो तो साध्य-असाध्य या अरिष्ट की जाँच-परख से ज्यादा महत्त्व युक्ति के प्रयोग पर दिया जाना चाहिये। और इस युक्ति में रसायन महत्वपूर्ण भूमिका रखते हैं। इसलिये मेरा मानना है कि आयुर्वेदाचार्यों की देखरेख में लिये जाने वाले रसायन मोत के मुंह से निकाल लाने की क्षमता रखते हैं। रसायनों की क्षमताओं को पहचानिये। रसायन जरा-व्याधि का नाश तो करते ही हैं, जीवन का नाश भी रोक सकते हैं।

–**अतिथि सम्पादक, डॉ. दीप नारायण पाण्डेय (भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंगप्रोफेसर) (यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)**

राजस्थान में डबल इंजन की रफ्तार: समन्वित नेतृत्व से तेज़ विकास की नई इबारत



राजेंद्र गहलोत

राजस्थान की राजनीति और विकास यात्रा के वर्तमान अध्याय में डबल इंजन सरकार केवल एक राजनीतिक नारा नहीं, बल्कि नीतिगत समन्वय और संसाधनों के अधिकतम उपयोग का व्यावहारिक मॉडल बनकर उभरा है। एक ओर केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में प्रस्तुत केंद्रीय बजट 2026-27 और दूसरी ओर राज्य में मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व में घोषित राजस्थान बजट 2026-27 दोनों मिलकर विकास की ऐसी समवेत धारा बना रहे हैं, जिसका प्रभाव प्रदेश के गांव से लेकर महानगर तक स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

केंद्रीय बजट 2026-27 में राजस्थान को केंद्रीय करों में हिस्सेदारी के रूप में 90,445 करोड़ रुपये मिलना राज्य के लिए बड़ी उपलब्धि है। पिछले वर्ष की तुलना में 6,505 करोड़ रुपये की वृद्धि यह दर्शाती है कि वित्तीय संघवाद की भावना के अनुरूप राज्यों को अधिक संसाधन उपलब्ध कराए जा

रहे हैं। इनकम टैक्स से 32,187 करोड़ रुपये और कॉर्पोरेट टैक्स से 26,550 करोड़ रुपये का अनुमानित हिस्सा यह संकेत देता है कि औपचारिक अर्थव्यवस्था के विस्तार का लाभ राजस्थान तक प्रभावी रूप से पहुंच रहा है। इन केंद्रीय संसाधनों का समन्वय राज्य के 6,10,956 करोड़ रुपये के विशाल बजट से होता है। यह वर्ष अधिक है। नीति, पूंजी और क्रियान्वयन की एकरूपता डबल इंजन का वास्तविक अर्थ है। राजस्थान सरकार ने वर्ष 2047 तक राज्य की अर्थव्यवस्था को 4.3 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचाने का संकल्प लिया है। यह लक्ष्य केवल महत्वाकांक्षी नहीं, बल्कि ठोस आधार पर आधारित है। राज्य की सकल घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) 21.52 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचने का अनुमान है, जबकि प्रति व्यक्ति आय पहली बार 2 लाख रुपये से अधिक होने की संभावना है। यह संकेत है कि विकास केवल कामगजों तक सीमित नहीं, बल्कि नागरिकों की जेब तक पहुंच रहा है।

केंद्र का विजन 2047 और राज्य का 4.3 ट्रिलियन लक्ष्य दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। राष्ट्रीय स्तर पर 12.2 लाख करोड़ रुपये का सार्वजनिक पूंजीगत व्यय और राज्य स्तर पर 53,978 करोड़ रुपये का पूंजीगत व्यय का प्रावधान से सड़क, रेल, जल, ऊर्जा और डिजिटल ढांचे में व्यापक परिवर्तन स्पष्ट होता है। केंद्रीय स्तर पर लॉजिस्टिक्स, रेल और राष्ट्रीय राजमार्गों में निवेश तथा राज्य स्तर पर सड़क, शहरी विकास और जल परियोजनाओं में पूंजीगत व्यय का संयोजन प्रदेश के औद्योगिक और कृषि विकास को नई गति दे रहा है। जल जीवन मिशन के लिए 67,600 करोड़ रुपये का राष्ट्रीय प्रावधान और राज्य में यमुना जल परियोजना (32,000 करोड़ रुपये) तथा रामजल सेतु लिंक परियोजना (26,000 करोड़ रुपये) जैसे प्रयास मिलकर जलबंधन ने उद्योग जगत में नई ऊर्जा भरी है। किशनगढ़ का मार्बल उद्योग, भीलवाड़ा का टेक्सटाइल क्लस्टर, जयपुर का जेम्स एंड ज्वेलरी क्षेत्र और अलवर का ऑटो कंपोनेंट उद्योग तकनीकी उन्नयन और पूंजी उपलब्धता से लाभांश्वित होंगे।

राज्य स्तर पर निवेश प्रोत्साहन और औद्योगिक अवसरचना का विस्तार इन केंद्रीय पहलों को जमीन पर उतारने में सहायक सिद्ध हो रहा है। निजी क्षेत्र में 2 लाख से अधिक रोजगार अवसर सृजित होना इसी समन्वित नीति का परिणाम है। राजस्थान बजट में शिक्षा के लिए 35 प्रतिशत वृद्धि कर 69,000 करोड़ रुपये का प्रावधान मानव संसाधन सशक्तिकरण की गंभीरता को रेखांकित करता है। 400 स्कूलों को सीएम राइज विद्यालयों के रूप में उन्नत करना और प्रत्येक जिले में ग्ल्स हॉस्टल स्थापित

आदिकाल से लाइफ मैनेजमेंट के सर्वश्रेष्ठ गुरु भोलेनाथ से जुड़े रोचक रहस्य



डॉ. जे.के. गर्ग

हम सभी आत्म चिंतन करें जब शिवजी के परिवार में विरोधी स्वभाव के प्राणी भी प्रेमपूर्वक साथ साथ प्रेमपूर्वक रहते हैं तो क्यों नहीं हम हमारे समाज एवं देश में बिना किसी भेदभाव के गिरे हुओं को, पिछड़े हुओं को, विभिन्न धर्मों के अनुयायियों को साथ लेकर चल सकते हैं? यह भी सत्य कि कुछ धर्मांध स्वार्थी पथभ्रष्ट तथाकथित धार्मिक मनुष्य मौका मिलने पर अपने निज स्वार्थ के खातिर समाज में सांप्रदायिक सहभाव को नष्ट करने के अंदर शामिल हो जाते हैं। शिव रात्रि के पावन पर्व हम सभी सनातन धर्मी भारत वाशी संकल्प लें कि हम समाज के विभिन्न धर्मालंबी लोगों के साथ मिलजुल कर रहेंगे एक-दूसरे का सम्मान करके प्रेम पूर्ण संमंध बनायेंगे। समाज के अंदर ऊँच-नीच का भेदभाव मिटाने के लिये काम करेंगे। आदि काल के सर्वश्रेष्ठ मैनेजमेंट गुरु भोलेनाथ अपने परिवार के अंदर निवास करने वाले विपरीत स्वभाव वाले प्राणी बिच्छू, बैल और सिंह, मयूर एवं सर्प और चूहा जैसे घोर विरोधी स्वभाव के प्राणियों के साथ प्रेमपूर्वक रहते हैं तो हम विभिन्न धर्मों के अनुयायियों हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई, प्रार्सी, जैन देश वेदियों को साथ लेकर क्यों नहीं जीवन व्यापन कर सकते हैं? सही मायने में भगवान शिव की सच्ची पूजा-आराधना तभी होगी जब हम उनकी शिक्षाओं को जीवन के अंदर धारण करके मिल-जुल कर

प्रेमपूर्वक एक परिवार की भाती रहेंगे। ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय। भोलेनाथ जितने रहस्यमयी हैं उतनी ही उनकी वेश-भूषा भी अनूठी ही है, इसी के साथ भोले मकर से जुड़े तथ्य भी उतने ही विचित्र और अनोखे हैं। भोलेनाथ शिव जी रमशान में निवास करते हैं, भोलेनाथ गले में नाग धारण करते हैं, भांग व धतूरा ग्रहण करते हैं। सनातन धर्मी फाल्गुन के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी यानी 15 फरवरी 2026 को शिवरात्रि धूमधाम से मनाएंगे। जनसाधारण के मन में सवाल उत्पन्न होते हैं कि क्यों फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को शिवरात्रि का त्योहार मनाया जाता है? धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक ऐसा माना जाता है कि सृष्टि की रचना इसी दिन हुई थी। मध्य रात्रि में भगवान शंकर का ब्रह्मा से रुद्र के रूप में अवतरण हुआ था। ईशान संहिता के अनुसार फाल्गुन चतुर्दशी की अद्वर्दशी में भगवान शंकर रूद्र के रूप में अवतरित हुए। चतुर्दशी तिथि के महानिशीथ काल में महेश्वर के निराकार ब्रह्म स्वरूप प्रतीक शिवलिंग का अविभाज्य होने से भी यह तिथि महाशिवरात्रि के नाम से जानी जाती है। इसी दिन, भगवान विष्णु व ब्रह्मा के समक्ष सबसे पहले शिव का अत्यंत प्रकाशवान स्वरूप प्रकट हुआ था। कहा जाता है कि शिवरात्रि के दिन भगवान शिव और आदिशक्ति का विवाह हुआ था। मान्यताओं के अनुसार महाशिवरात्रि के दिन ही समुद्र मंथन के दौरान कालकेतु विष्णु निकला था। भगवान शिव ने संपूर्ण ब्रह्मांड की रक्षा के लिए स्वयं ही सारा विष पी लिया था। इससे उनका गला नीला पड़ गया और तभी से शिवजी को नीलकंठ के नाम से जाना जाता है। भोले नाथ को सांसारिक होते हुये भी रमशान का निवासी बोला जाता है इसके पीछे भी लाइफ मैनेजमेंट का महत्वपूर्ण रहस्य छिपा है।

जानिये कैसे? सच्चाई तो यही है कि संसार मोह-माया का प्रतीक है वहीं

दूसरी तरफ रमशान वैराग्य का प्रतीक है। प्रभु शिव कहते हैं कि आदमी को संसार में रहते हुए अपने कर्तव्य पूरे करने चाहिए वहीं साथ साथ मोह-माया से दूर भी रहना चाहिये। क्योंकि शरीर और संसार दोनों ही नाशवान हैं। एक न एक दिन यह सब कुछ नष्ट होने वाला है। इसलिए संसार में रहते हुए भी आदमी को किसी से मोह नहीं रखते हुए अपने कर्तव्य पूरे करने के साथ साथ एक बैरागी की तरह जीना चाहिये।

मन के अंदर सवाल उठता है कि शिवलिंग मंदिरों में बाहर क्यों होता है? निःसंदेह भोले नाथ जन साधारण के देवता हैं, इसीलिए भोलेनाथ वहां रहते हैं जहाँ छोटे-बड़े, जवान-बुजुर्ग आसानी से पहुंच सके। इसी मान्यता के कारण शिवलिंग को मंदिरों में बाहर ही स्थापित किया जाता है जिससे बच्चे-बूढ़े-जवान जो भी जागू शिवलिंग को छूकर, गले मिल कर या फिर भगवान् के पैरों में पड़कर अपना दुखड़ा सुना कर हल्के हो सकते हैं। इसी वजह से शिवजी अकेले ही वो देव हैं जो गर्भ गृह में भक्तों को दूर से ही दर्शन देते हैं। शिवजी को भोग लगाने और अर्पण करने के लिए कुछ भी नहीं हो तो भक्त उन्हें पत्ता, फूल, या अंजलि भर के भोले नाथ को खुश कर सकता और उनकी पूजा-अर्चना कर सकता है।

निःसंदेह बेलपत्र भगवान शिव को बेहद प्रिय है और इसलिए शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ाए बिना शिव की पूजा को पूरा नहीं माना जाती है। बेलपत्र में तीन पत्तियां हैं जिसको लेकर कई तरह की धारणाएं विद्यमान हैं। बेलपत्र में तीन पत्तियां को त्रिवेद (सूचन, पालन और विनाश के देव ब्रह्मा, विष्णु और शिव) माना गया है तो कहीं सत्व, रज और तम गुण का परियाचक माना जाता है। ध्यान देने योग्य बात है कि कहीं बेलपत्र में तीन पत्तियों को तीन आदि ध्वनियां जिनकी सम्मितांतर गूंज से अंत बनता है का प्रतीक माना गया है। बेलपत्र की इन तीन पत्तियों को महादेव त्रिनेत्र और भोलेनाथ के हथियार त्रिशूल का भी

करने की केंद्रीय घोषणा, दोनों मिलकर बालिकाओं की शिक्षा और सुरक्षा को नई दिशा दे रहे है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में 32,526 करोड़ रुपये का प्रावधान, जयपुर में 500 बेड का आईपीडी टावर और आरयूरएएस में 200 बेड की बाल चिकित्सा सुविधा जैसे कदम गुणवत्ता आधारित स्वास्थ्य सेवाओं की ओर संकेत करते हैं। केंद्र और राज्य के संयुक्त प्रयासों से चिकित्सा अवसरचना में सुधार का सीधा लाभ आमजन को मिल रहा है। राज्य में राजस्थान स्टेट टेस्टिंग एजेंसी की स्थापना और ऑनलाइन टेस्टिंग सेंटरों के माध्यम से पारदर्शी भर्ती प्रणाली युवाओं के विश्वास को मजबूत करती है। पांच वर्षों में 4 लाख सरकारी नौकरियों के लक्ष्य की दिशा में 1 लाख से अधिक नियुक्तियां दी जा चुकी हैं और 1.54 लाख पदों पर प्रक्रिया जारी है। केंद्र की स्किल डेवलपमेंट और स्टार्ट-अप योजनाएं राज्य की भर्ती और कौशल पहलों के साथ मिलकर युवाओं को अवसरों का व्यापक दायरा प्रदान कर रही हैं। यह जनसांख्यिकीय लाभांश को उत्पादक पूंजी में बदलने का प्रयास है। स्वयं सहायता समूहों की ऋण सीमा 1 करोड़ रुपये तक बढ़ाना और लखपति दीदी योजना में ऋण विस्तार महिलाओं को आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ा रहा है। प्रत्येक जिले में ग्ल्स हॉस्टल और महिला उद्यमिता योजनाएं सामाजिक सुशां और सशक्तिकरण का मजबूत आधार बन रही हैं। डबल इंजन मॉडल में सामाजिक न्याय और आर्थिक अवसर साथ-साथ चल रहे हैं।

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

विरासत से जुड़ी है। 2047 तक पर्यटन के जीडीपी योगदान को 10 प्रतिशत तक ले जाने का राष्ट्रीय लक्ष्य और राज्य स्तर पर जैसलमेर के खूदी में अल्ट्रा लज्जरी टूरिज्म जोन तथा शेखावाटी की हवेलियों के पुनरुद्धार के लिए 200 करोड़ रुपये का प्रावधान पर्यटन को राज्य के साथ रोजगार सृजन का माध्यम बना रहे है। डिजिटल नॉलेज ग्रिड, गाइड प्रशिक्षण और इको-टूरिज्म पहलें राजस्थान को वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर और मजबूत स्थान दिला सकती हैं।

मुख्यमंत्री भनजलाल शर्मा का नेतृत्व इस पूरी प्रक्रिया में केंद्रीय भूमिका निभा रहा है। प्रशासनिक अनुभव, वित्तीय अनुशासन और क्रियान्वयन पर जोर ने बजट घोषणाओं को धरातल पर उतारने की दिशा में गति दी है। राज्य कर्मचारियों और पेंशनर्स के लिए उच्च स्तरीय समिति का गठन तथा आठवें वेतन आयोग की सिफारिशों पर विचार से स्पष्ट है कि सरकार प्रशासनिक तंत्र को विकास का सहभागी मानती है।

राजस्थान में डबल इंजित सरकार का मॉडल यह प्रमाणित कर रहा है कि जब केंद्र और राज्य की नीतियां एक-दूसरे के पूरक बनती हैं, तो संसाधनों का बेहतर उपयोग और तेज विकास संभव होता है। केंद्रीय बजट से बड़े संसाधन, राज्य बजट की संरचनात्मक प्रार्थमिकताएं, पूंजीगत निवेश में वृद्धि, मानव संसाधन पर फोकस और दीर्घकालिक विजन मिलकर राजस्थान को आत्मनिर्भर और समृद्ध राज्य बनाने की दिशा में अग्रसर कर रहे हैं।

–**राजेंद्र गहलोत, सदस्य राज्यसभा**

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थान की पहचान पर्यटन और

राजस्थ